इमाइल दुर्खीम: धर्म तथा अन्य अवधारणाएँ

(Emile Durkheim: Religion & Other Concepts)

डॉ. अनुराग कुमार पाण्डेय

सहायक प्रोफेसर

समाजशास्त्र विभाग

जे. एस. हिन्दू (पी. जी.) कॉलेज, अमरोहा

धर्म

- *The Elementary Forms of Religious Life*, 1912 (तीन वर्ष बाद अंग्रेजी अनुवाद)
- ऐसे यहूदी परिवार में जन्म, जहां धार्मिक विधि–विधानों तथा विश्वासों का विशेष स्थान था।
- आदिम समाजों में पाये जाने वाले धार्मिक विश्वासों व कर्मकांडों के आधार पर धर्म के प्रारंभिक स्वरूप को जानना।
- प्रकृतिवाद तथा आत्मावाद जैसे विचारों का खंडन
- धर्म के प्रारंभिक स्वरूप के रूप में गणचिह्नवाद अथवा टोटमवाद की व्याख्या
- केंद्रीय ऑस्ट्रेलिया की अरुण्टा जनजाति का अध्ययन

धर्म एक सामाजिक प्रघटना है तथा इसका अध्ययन सामाजिक तथ्यों की सहायता से किया जा सकता है।

धर्म

- धर्म मनोवैज्ञानिक–बौद्धिक घटना नहीं है, बल्कि एक सामाजिक घटना है।
- धर्म का संबंध सामूहिक चेतना से है।
- धर्म वास्तव में समाज का ही प्रतिबिंब है। दूसरे शब्दों में धर्म सामूहिक प्रतिनिधित्व का प्रतिबिंब है।
- धर्म की वास्तविक अभिव्यक्ति ईश्वर नहीं, बल्कि समाज है।
- दुर्खीम के शब्दों में,

'धर्म पवित्र वस्तुओं से संबंधित अनेक विश्वासों तथा आचरणों की वह व्यवस्था है जो अपने से संबंधित लोगों को एक नैतिक समुदाय से जोड़ती है।'

धर्म पवित्र वस्तुओं से संबंधित विश्वासों व अनुष्ठानों की व्यवस्था है।

वास्तविक जगत की समस्त वस्तुओं का वर्गीकरण

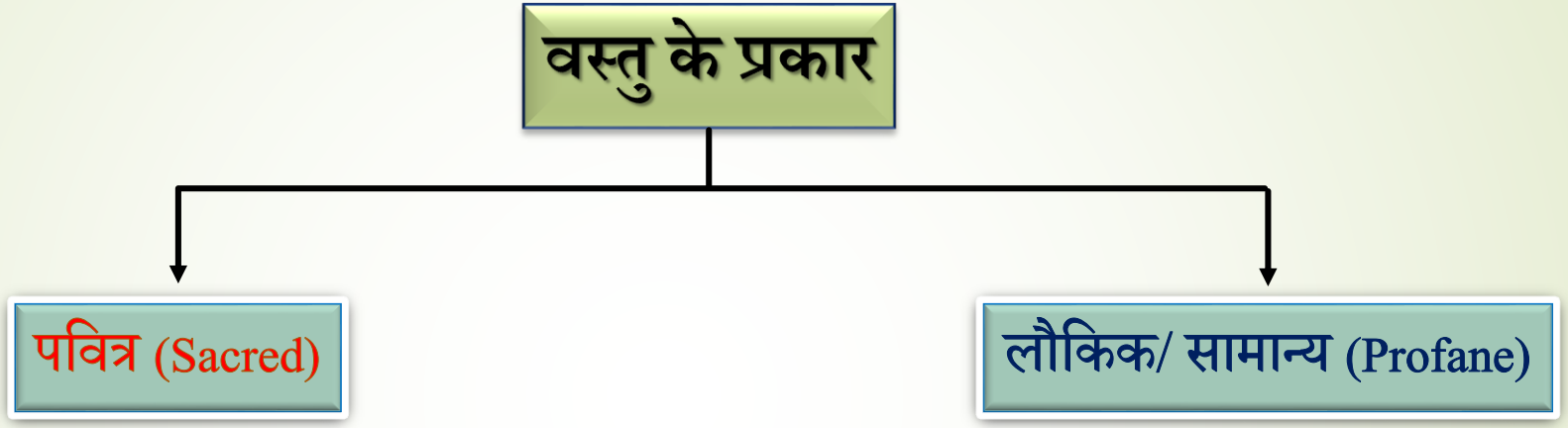

पवित्र वस्तुएँ वे हैं जिनकी अनेक निषेधों के द्वारा रक्षा की जाती है, जबकि लौकिक वस्तुएँ वे हैं जिन्हें अनेक निषेधों के द्वारा पवित्र वस्तुओं से दूर रखने का प्रयत्न किया जाता है।

समाज द्वारा वस्तुओं को पवित्र अथवा लौकिक स्वरूप प्रदान किया जाता है।

- विशिष्ट गुण
- बाजार में सौदेबाजी
- अलौकिक शक्ति
- हानिकारक/ लाभदायक
- मूर्त/ अमूर्त
- वैयक्तिक दृष्टिकोण

धर्म का प्रारंभिक स्वरूप

- यह अध्ययन मूल रूप से दो प्रश्नों की तलाश से संबंधित है –
  1. दुर्खीम को धर्म के मूल तत्वों के बारे में जानकारी करने की उत्सुकता क्यों थी?
  2. तथा इसके लिए उन्होंने आदिम समाज का चयन ही क्यों किया?
- दुर्खीम का मत है कि धर्म के विकास की प्रक्रिया तथा उसकी जटिलता को समझने के लिए यह अत्यंत आवश्यक है कि उसके प्रारंभिक स्वरूप के बारे में जानकारी कर ली जाए। धर्म के सरल तथा मूल तत्व आदिम समाजों में विद्यमान होते हैं।
- समय व परिस्थिति के अनुरूप धर्म में होने वाले परिवर्तनों की व्याख्या केवल धर्म के प्रारंभिक स्वरूप के आधार पर की जा सकती है।
- **धर्म का प्रारंभिक स्वरूप टोटमवाद है।**

धर्म का प्रारंभिक स्वरूप: टोटमवाद

- **ऑस्ट्रेलिया की अरुण्टा जनजाति का अध्ययन**
- अरुण्टा जनजाति के जीवन के दो पहलुओं का अध्ययन –
  1. जब व्यक्ति अकेला होता है।
  2. जब व्यक्ति अन्य लोगों के साथ सामूहिक जीवनयापन करता है।

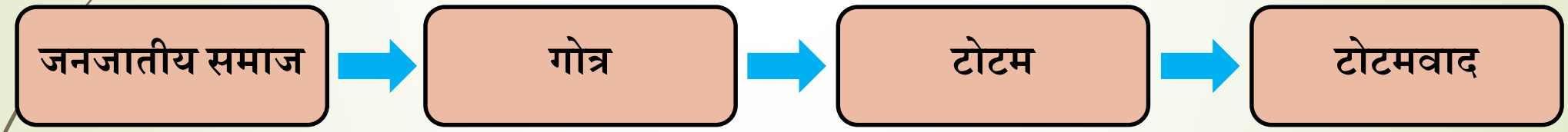

दुर्खीम ने धर्म को पवित्र वस्तुओं से संबद्ध करके तथा पवित्रता का स्रोत समाज को बताकर यह स्थापित किया है कि धर्म सामूहिक चेतना अथवा समाज की अभिव्यक्ति है तथा धार्मिक पूजा की सच्ची वस्तु समाज की पूजा करना है।

धर्म के प्रकार्य

- अनुशासनात्मक तथा प्रारंभिक समाजीकरण
- सामाजिक एकता
- सामूहिकता
- भाई–चारा
- आनंद–उल्लास तथा खुशहाली की अनुभूति
- सामाजिक धरोहर/ विरासत की पुनर्स्थापना

धर्म: सामाजिक तथ्य के रूप में

- **प्रत्येक समाजों में विद्यमान**
- **स्वत: स्फूर्त (Sui generis):** समाज के साथ विकसित
- **एकीकरण की क्षमता:** आवश्यकताओं की आपूर्ति हेतु

बाह्यता (Externality)

बाध्यता (Constraint)

सामान्यता (Generality)

स्वतंत्रता (Indepedence)

अन्य अवधारणाएँ

- **सामाजिक प्रवाह/ धारा (Social Current)**

  ऐसे सामाजिक तथ्य जो सामाजिक संगठनों की तरह स्पष्ट तो नहीं हैं, लेकिन उनका सामाजिक तथ्यों की तरह ही व्यक्ति के ऊपर वर्चस्व रहता है। इनकी प्रकृति वस्तुनिष्ठ होती है।

- **यांत्रिक तथा सावयवी समाज**

- **सामूहिक चेतना तथा सामूहिक प्रतिनिधान**

- **दमनकारी तथा प्रतिकारी कानून**

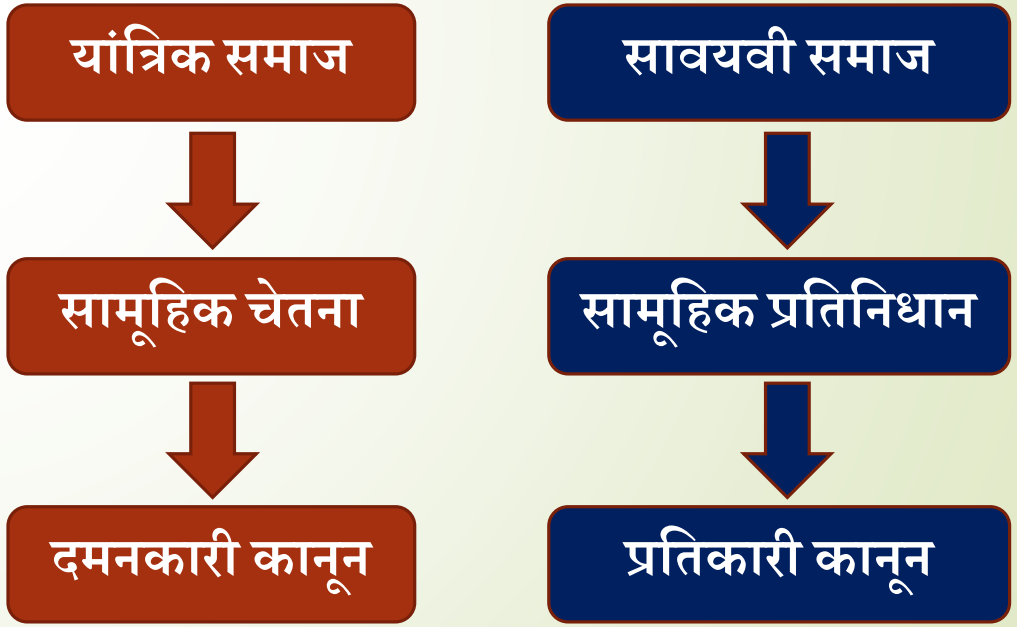

अन्य अवधारणाएँ

- **विसंगति/ विचलन (Anomie)**

  समाजों या व्यक्तियों में, मानकों और मूल्यों के टूटने अथवा उद्देश्य या आदर्शों की कमी के परिणामस्वरूप अस्थिरता की स्थिति ही विचलन है।

- **नैतिकता (Morality)**

  'आचरण के नियमों की प्रणाली'

  दुर्खीम के शब्दों में, *'मनुष्य एक नैतिक प्राणी नहीं है, लेकिन चूंकि वह समाज में रहता है, इसलिए (उसमें) एक सामूहिक एकजुटता/ एकता के साथ नैतिकता बनी रहती है तथा परिवर्तित होती रहती है।'*

Next Class:

हर्बर्ट स्पेंसर: सावयवी सादृश्यता तथा उद्विकासवाद

(Herbert Spencer: Organic Solidarity & Evolutionism)